एक कहानी कई रंग–14 ः

अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Ali Baba Aur Chalis Chor Jaisi Kahaniyan (Ali Baba and Forty Robbers Like Stories)
Cover Page picture : Marjina Dancing
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ........ 7

1 अली बाबा और चालीस चोर 9

2 डाकुओं को लूटा........ 44

3 तेरह डाकू........ 53

4 एक आदमी जिसने डाकुओं को लूटा 63

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं करीब करीब **2000** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुॅची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ

आहा। अली बाबा चालीस चोर। यह तो मेरी बहुत ही प्रिय कहानी है। क्या ऐसी कहानियॉ और भी हैं और कहॉ कहॉ सुनी जाती हैं। क्या वे इसी जैसी हैं या कुछ अलग हैं। अरे अरे अरे तुमने तो बहुत सारे सवाल पूछ लिये। इन्हीं सवालों का जवाब है यह पुस्तक।

ये कहानियॉ ऐसी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाने पर भी सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम **13** पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। इसमें "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[2] इसकी दूसरी पुस्तक में "नीली दाढ़ी वाला" जैसी कहानियॉ थीं और इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[3]

अब प्रस्तुत है इस सीरीज़ की **14**वीं पुस्तक "अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ'। यह कहानी मूल रूप से अरेबियन नाइट्स की कहानी है इसलिये इस पुस्तक में सबसे पहले वही दी जा रही है। उसके बाद ही दूसरी जगहों की वैसी कहानियॉ दी जा रही हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

तो लो पढ़ो अली बाबा और चालीस चोर की कहानी और उस जैसी दूसरी कहानियॉ...

---

[2] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[3] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"

1 अली बाबा और चालीस चोर[4]

अली बाबा और चालीस चोर की कहानी अरेबियन नाइट्स की एक बहुत ही मशहूर कहानी है। छोटे बच्चे इसको बड़े शौक से सुनते हैं।

तुमने भी यह कहानी जरूर सुनी होगी इसलिये यह कहानी तुम्हारे लिये कोई नयी कहानी नहीं होनी चाहिये पर क्योंकि इस पुस्तक में वैसी ही कुछ कहानियॉ और दी गयी हैं इसलिये इस कहानी का देना यहॉ बहुत जरूरी हो जाता है।

सब अपने अपने तरीके से कहानियॉ कहते और सुनते हैं पर हमने यह कहानी अरेबियन नाइट्स के एक बहुत ही मशहूर लेखक की पुस्तक से इसको चुना है जिसने उस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इसलिये यह कहानी तुम्हें शायद वैसी न लगे जैसी कि तुमने कहीं पढ़ी या सुनी हो।

इस पुस्तक की बहुत सारी कहानियॉ तुम अंग्रेजी में इस वेब साइट पर जा कर पढ़ सकते हो।[5] यह कहानी भी उसी वेब साइट से उसका हिन्दी अनुवाद कर के लिखी गयी है।

[4] Ali Baba and the Forty Thieves – a tale from Arabian Nights. This story has been taken from the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-2/44-aleebaabaa-1.htm

[5] http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

एक बार की बात है कि फारस देश में एक जगह दो भाई रहते थे – कासिम और अली बाबा। उनके पिता मर चुके थे और वे बहुत गरीब थे। हालॉकि उनके पिता ने अपनी सम्पत्ति अपने दोनों बेटों में बॉट दी थी पर वह कोई बहुत ज़्यादा नहीं थी।

बाद में कासिम ने एक विधवा से शादी कर ली थी जो शादी के जल्दी ही बाद एक बहुत बड़ी जायदाद एक अच्छी दूकान और एक बहुत बड़े मालदार भंडारघर की मालकिन बन गयी थी। इस तरह उन्होंने अब एक अमीर आदमी की तरह ज़िन्दगी बिताना शुरू कर दिया था।

उधर अली बाबा अभी भी गरीब था उसकी शादी भी एक गरीब लड़की से हुई थी इसलिये उनकी हालत खराब ही थी। वह अपना और अपना घर चलाने के लिये लकड़ी काटता था। अपनी लकड़ी लादने के लिये उसके पास तीन गधे थे।

एक बार जब उसने जंगल में से लकड़ी काट ली और वह उनको अपने गधों पर लाद रहा था तो उसने दूर उड़ता हुआ धूल का बादल देखा जो धीरे धीरे उसी की तरफ बढ़ा चला आ रहा था। हालॉकि वहॉ लोग डाकुओं से डरते नहीं थे फिर भी अली बाबा ने उनसे बचने का सोचा।

वह एक घने से पेड़ के ऊपर चढ़ गया और उसकी शाखाओं में छिप कर बैठ गया। वह वहॉ ऐसे बैठा था कि वहॉ से वह सब देख

सकता था। यह पेड़ एक ऐसी चट्टान के नीचे की तरफ खड़ा हुआ था जिस पर कोई नहीं चढ़ सकता था।

उसने देखा कि कुछ घोड़ों पर सवार लोग वहीं उसी चट्टान और उसी पेड़ के नीचे आ गये जहॉ अली बाबा छिपा बैठा था। उसने देखा कि वे सब लोग घोड़ों पर सवार थे और हथियारों से लैस थे। वे सब वहॉ आ कर अपने अपने घोड़ों से नीचे उतर पड़े।

अली बाबा ने उनको गिना तो वे सब चालीस थे। वे डाकू थे और वे वहॉ अपना सामान रखते थे। उन्होंने अपने अपने घोड़ों को बॉध दिया और उन्हें कुछ दाना खाने के लिये दिया। उन पर लदे हुए अपने अपने थैले उठाये जो किसी धातु के बोझ से भारी से लग रहे थे।

उनमें से एक जो उनका सरदार लग रहा था चट्टान के पास आया और बोला "खुल जा सैसैमी"[6]। तुरन्त ही उस चट्टान में एक दरवाजा खुल गया और सारे डाकू उसके अन्दर घुस गये। उनका सरदार उन सबके अन्दर जाने के बाद में गया। सरदार के अन्दर जाते ही दरवाजा बन्द हो गया।

वे लोग उसके अन्दर कुछ देर रहे तब तक अली बाबा बाहर उनके निकलने का इन्तजार करता रहा। आखिर दरवाजा खुला

[6] "Open Sesame" – this was the code phrase to open the door of the cave. Sesame is called "Til" in Hindi.

और वे सब डाकू उसमें से बाहर निकले। इस बार सरदार पहले निकला और उसके साथी बाद में निकले।

जब सब बाहर निकल आये तो सरदार ने कहा "बन्द हो जा सैसैमी"[7] और चट्टान का दरवाजा बन्द हो गया। सब फिर कहीं बाहर चले गये।

अली बाबा तभी एकदम से पेड़ से नीचे नहीं उतरा कि कहीं ऐसा न हो कि वे कोई चीज़ भूल गये हों और फिर उसे लेने के लिये वापस आ जायें। वह वहीं बैठा बैठा उनका कुछ देर तक इन्तजार करता रहा।

जब उसने यह यकीन कर लिया कि वे अब वापस नहीं आयेंगे तब वह पेड़ से नीचे उतरा और उसने खुद उन शब्दों का इस्तेमाल कर के देखा ताकि वह यह देख सके कि उन शब्दों का वही असर होता है या नहीं। वह बोला "खुल जा सैसैमी" और उस चट्टान में एक दरवाजा खुल गया।

वह उसके अन्दर चला गया। वह एक बहुत बड़ी खूब रोशनी वाली जगह थी। उसमें उस चट्टान की छत में बनी एक झिरी में से खूब रोशनी आ रही थी।

उस गुफा में बहुत सारी चीजें थीं – रेशम का कपड़ा, ब्रोकेड[8], कालीन, सोना, चॉदी। सब चीज़ों के बड़े बड़े ढेर लगे हुए थे। ऐसा

[7] Shut Sesame – these are the code words to shut the door of the cave

[8] A special kind of cloth woven with gold and silver threads

लग रहा था कि डाकुओं ने इस गुफा को बहुत दिनों से कब्जा रखा था – पीढ़ियों से।

जैसे ही वह गुफा के अन्दर घुसा गुफा का दरवाजा बन्द हो गया। उसने वहॉ से इतने सारे सोने के सिक्के उठा लिये जितने उसके तीन गधे ले जा सकते थे। उनको गधों पर लाद कर उसने उनको लकड़ियों से ढक दिया ताकि उन्हें कोई देख न ले गुफा का दरवाजा बन्द किया और घर आ गया।

घर आ कर उसने लकड़ी एक जगह उतारी और सोने के सिक्कों के थैले घर में अन्दर ले गया। जब उसकी पत्नी ने इतना सारा सोना देखा तो उसको लगा कि उसके पति ने उसे कहीं से चुराया है।

उसने अपने पति की तरफ सवाल की नजर से देखा तो अली बाबा बोला — "चुप रहो और डरो नहीं। मैंने किसी को लूटा नहीं है।" और उसके बाद उसने उसे सब कुछ खोल कर बता दिया और उससे कहा कि वह उसको छिपा कर रखे।

उसकी पत्नी यह सब सुन कर बहुत खुश हुई। वह उस पैसे को एक एक कर के गिनना चाहती थी तो अली बाबा हॅस कर बोला — "तुम्हें पता भी है कि तुम क्या कह रही हो। ये तो इतने सारे है कि इनको गिनते गिनते तो तुम गिनती ही भूल जाओगी। मैं एक गड्ढा खोद कर जल्दी से इनको उसमें हुए गाड़ देता हूॅ।"

पत्नी बोली — "हॉ यह तो तुम ठीक कहते हो पर हमको यह तो जानना ही चाहिये न कि यह हैं कितने। जब तक तुम गड्ढा खोदते हो तब तक मैं इनको तौलने के लिये पड़ोस में से एक छोटी सी तराजू ले कर आती हूँ।"

अली बाबा बोला — "हालॉकि जो कुछ तुम कर रही हो इसका कोई मतलब नहीं है पर फिर भी याद रखना कि इसका कहीं भेद न खुल जाये। फिर तुम जो चाहो कर सकती हो।"

अली बाबा की पत्नी तुरन्त ही भागी हुई कासिम के घर गयी और उसकी पत्नी से उसकी तराजू मॉगी। कासिम की पत्नी अली बाबा की यह अजीब सी मॉग सुन कर कुछ उत्सुक हो गयी कि आखिर वह उसकी तराजू से क्या तौलना चाहती है।

क्योंकि जहॉ तक उसको पता था वे लोग तो इतने गरीब थे कि उनके पास तो खाने के लिये काफी नहीं था तो फिर अब यह तौलने लायक कोई चीज़ क्या आ गयी। यह जानने के लिये उसने तराजू के एक पलड़े के नीचे उसने थोड़ा सा गोंद लगा दिया।

अली बाबा की पत्नी तो इतनी खुश थी कि उसने यह भी नहीं देखा कि तराजू के पलड़े के नीचे गोंद लगा है। वह उसको ले कर जल्दी से भागी भागी घर आयी।

उसने उसको सोने के सिक्कों के ढेर के ऊपर रखा उन्हें तौला और खाली कर दिया। फिर तौला और फिर खाली कर दिया। इस

तरह से वह उनको जब तक तौलती रही जब तक उसके सारे सिक्के नहीं तुल गये।

तब तक अली बाबा ने भी अपना गड्ढा खोद लिया था सो वह अपना सारा सोना गड्ढे की तरफ ले गया और उसने उसे उसमें गाड़ दिया। अली बाबा की पत्नी भी तुरन्त ही कासिम की तराजू उसकी पत्नी को वापस कर आयी।

पर उसको यह पता नहीं चला कि कासिम की तराजू के एक पलड़े में गोंद लगा था और उसके सिक्के तौलते समय उनमें से एक सिक्का उस गोंद से तराजू में चिपक गया था। उसने कासिम की पत्नी को धन्यवाद दिया और अपने घर वापस आ गयी।

पर कासिम की पत्नी को चैन कहॉ। जैसे ही अली बाबा की पत्नी वहॉ से गयी उसने तुरन्त ही तराजू का पलड़ा देखा कि अली बाबा की पत्नी ने उस तराजू में क्या तौला था। उसने देखा कि उसकी तली में तो सोने का एक सिक्का लगा हुआ था।

यह देख कर वह तो जलन से भर उठी — "क्या अली बाबा के पास इतना सारा सोना आ गया कि उसको उसे तौलने की जरूरत पड़ गयी। पर इतना सारा सोना उसके पास आया कहॉ से।"

रह रह कर ऐसे सवाल उसके दिमाग को परेशान करते रहे। यह सब बातें कासिम को बताने के लिये वह बहुत बेचैन हो रही थी सो शाम को जब कासिम दूकान से घर लौटा तो उसने उससे कहा — "तुम समझते हो कि एक तुम ही बहुत बड़े अमीर हो पर तुम

गलती पर हो। अली बाबा तुमसे कहीं ज़्यादा अमीर है। वह पैसे गिनता नहीं बल्कि तौलता है।"

पहले तो कासिम की समझ में कुछ आया नहीं फिर उसने कासिम को सारी कहानी बतायी और सबूत के तौर पर वह सोने का सिक्का दिखाया जो उसकी तराजू में चिपक कर आ गया था। वह सिक्का भी इतना पुराना था कि वह यह भी पता नहीं चला सका कि वह किस राजा के समय का था।

यह देख कर कासिम को भी अपने भाई से जलन होने लगी। इस जलन की वजह से उसको रात भर नींद नहीं आयी। अली बाबा की शादी के बाद उसने उसको कभी अपना भाई ही नहीं समझा।

जैसे ही सुबह हुई तो वह अली बाबा के घर गया — "तुम मुझसे झूठ बोलते रहे कि तुम बहुत गरीब हो और मेरे पीछे तुम सोना तौलते रहे।"

अली बाबा बोला — "क्या कह रहे हो भाई। तुम क्या कहना चाह रहे हो साफ साफ कहो न।"

तब कासिम ने उसको वह सोने का सिक्का दिखाया जो उसकी तराजू में चिपक कर आ गया था और बोला — "ऐसे कितने सिक्के हैं तुम्हारे पास। मेरी पत्नी ने यह सिक्का उस तराजू के पलड़े में चिपका पाया जो तुम्हारी पत्नी उससे कल उधार माँग कर ले गयी थी।"

अली बाबा की अब समझ में आया कि उसकी पत्नी की बेवकूफी से कासिम और उसकी पत्नी को पता चल गया है कि उसके पास सोने के बहुत सारे सिक्के हैं। अब उससे कुछ छिपाने से कोई फायदा नहीं था सो सब कुछ उसने उसे खोल कर बता दिया।

उसने उसको यह भी बताया कि यह गुफा उसको अचानक ही मिल गयी थी। उसने उसको कुछ सिक्के इस बात को छिपाने के लिये भी दिये।

कासिम बोला — "फिर भी मुझे इस गुफा का पता जानना है और वे शब्द जानने हैं जिनसे उसका दरवाजा खुलता और बन्द होता था ताकि मैं जब चाहूँ वहाँ जा सकूँ और कितना भी पैसा वहाँ से ला सकूँ। नहीं तो मैं तुम्हारी शिकायत पुलिस में कर दूँगा और फिर तुम्हें वहाँ से कुछ नहीं मिलेगा।"

अली बाबा ने उसे सब कुछ बता दिया। अब कासिम को अली बाबा की कोई जरूरत नहीं थी सो वह वहाँ से चला गया और इससे पहले कि अली बाबा वहाँ से खजाना ले कर आये उसने वहाँ से खुद खजाना लाने की सोची।

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और अपने **10** गधे और उनके ऊपर बड़े बड़े बक्से साथ ले कर उस गुफा की तरफ चल दिया। जल्दी ही वह अली बाबा की बतायी जगह पर आ गया। उसको गुफा का दरवाजा भी मिल गया।

उसने वहॉ जा कर कहा "खुल जा सैसैमी" और दरवाजा खुल गया। वह अन्दर चला गया और उसके अन्दर जाते ही दरवाजा बन्द हो गया।

गुफा के अन्दर उसने जो कुछ देखा तो उसको तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि उस गुफा में तो बहुत सारा सामान भरा पड़ा था। उसने इतना सारा खजाना पहले कभी नहीं देखा था। उसने वहॉ से इतना सोना इकट्ठा कर लिया जितना कि उसके **10** गधे ले कर जा सकते थे।

पर जब वह वहॉ से चलने लगा तो दरवाजा खोलने के लिये उसने कहा "खुल जा बारले"[9] तो यह कहने से तो दरवाजा नहीं खुला। उसने कई और अनाजों के नाम लिये पर फिर भी उनमें से किसी भी नाम से वह दरवाजा नहीं खुला।

कासिम ने तो इस ऐक्सीडैन्ट के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। वह जितना "सैसैमी" शब्द याद करने की कोशिश करता वह उसकी याद से उतना ही निकलता जाता। उसको पसीना आ गया। वह उस गुफा से निकलने के लिये इतना बेताब हो रहा था कि वह गुफा में इधर उधर चक्कर काटने लगा।

X X X X X X X

[9] "Open Barley" – barley is called "Jau" in Hindi.

इस बीच डाकू लोग वापस आ गये और गुफा में घुसे। जब वे अन्दर घुसे तो उन्होंने देखा कि एक आदमी गुफा के अन्दर था। उन्होंने अपने लाये हुए थैले अपनी अपनी जगह पर रख दिये।

उनको लगा कि वह आदमी किसी तरह उस गुफा में घुस तो आया था पर वहॉ से बाहर नहीं निकल सका। पर वे यह बात नहीं सोच सके कि वह अन्दर घुसा कैसे क्योंकि वे यह भी नहीं सोच सके कि किसी ने उनके वे छिपे हुए शब्द सुन लिये थे जो वे उसे खोलने और बन्द करने के लिये इस्तेमाल करते थे।[10]

पर क्योंकि अब यह सब कुछ हो चुका था तो गुफा की सुरक्षा बहुत जरूरी थी। उन्होंने कासिम के शरीर को चार हिस्सों में काट दिया और उनमें से दो हिस्से गुफा के दरवाजे के अन्दर की तरफ एक तरफ और दूसरे दो हिस्से दूसरी तरफ लटका दिये।

यह सब केवल उस आदमी को डराने के लिये किया गया था कि जो कोई भी गुफा के अन्दर आये वह उसकी हालत देख कर डर जाये। उसके बाद वे वहॉ से चले गये।

अब जब कासिम रात गये तक घर नहीं लौटा तो उसकी पत्नी बहुत डर गयी और वह अली बाबा के घर दौड़ी गयी और उससे जा कर बोली — "भैया। वह शायद वह गुफा की तरफ गये हैं और

[10] [My Note: here there is a flaw in this story, if this story is like this, then why the chief of the robbers did not ask Kasim himself as how did he enter the cave? Because in this way they could have find out everything from him only. But it seems that story is a story . . .

अभी तक वापस नहीं लौटे हैं। मुझे लगता है कि उनके साथ कुछ बुरा हो गया है।"

अली बाबा ने यह सोचा ही नहीं था कि कासिम इतनी जल्दी गुफा की तरफ चला जायेगा सो उसने कासिम के इस व्यवहार के लिये उसको बुरा भला कहा और कासिम की पत्नी से कहा कि वह थोड़ी देर उसका और इन्तजार करे शायद वह और रात को आ जायेगा।

पर आधी रात होने को आयी फिर भी कासिम का कोई पता नहीं था। कासिम की पत्नी रात को तो नहीं गयी पर दिन निकलते ही वह फिर अली बाबा के घर गयी।

अली बाबा ने उसे शान्त रहने के लिये कहा और खुद तुरन्त ही अपने तीनों गधों को साथ ले कर गुफा की तरफ चल दिया। वहॉ पहुँच कर उसने न तो अपने भाई को ही वहॉ देखा और न ही उसके गधों को देखा। हॉ उस गुफा के सामने खून की कुछ बूँदें जरूर पड़ी हुई थीं।

उसको भी लगा कि कासिम के साथ कुछ बुरा हो गया है सो उसने तुरन्त ही गुफा का दरवाजा खोला तो उसने क्या देखा कि उसके भाई का शरीर चार हिस्सों में बॅटा हुआ है। उसके शरीर के दो हिस्से दरवाजे के एक तरफ लटके हुए हैं और दूसरे दो हिस्से दरवाजे के दूसरी ओर लटके हुए हैं।

यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ। पर सब्र से काम लेते हुए उसने तुरन्त ही उन चारों हिस्सों को लिया अपने एक गधे पर लादा और बाकी के दो गधों पर सोना लादा गुफा का दरवाजा बन्द किया और रात होने के बाद घर की तरफ चल पड़ा। उसने दो गधे सोना तो अपनी पत्नी को दे दिया और तीसरा गधा ले कर अपनी भाभी के घर चल दिया।

घर का दरवाजा कासिम की अक्लमन्द नौकरानी मरजीना ने खोला। अली बाबा ने कासिम की लाश वहॉ उतारी और नौकरानी से कहा — "तुम अपनी मालकिन और मेरी भलाई के लिये मेहरबानी कर के इस बात को राज़ ही रखना।

तुम्हारे मालिक की लाश इन दो गठरियों में है और अब हमें इनको ऐसे दफ़नाना है जैसे कि इसकी मौत स्वाभाविक तरीके से हुई हो। अब तुम अन्दर जाओ और अपनी मालकिन से कहो कि मैं उससे बात करना चाहता हूॅ। और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसका ध्यान रखना।"

मरजीना यह सब बताने के लिये घर के अन्दर चली गयी और अली बाबा उसके पीछे पीछे चला गया। अली बाबा ने कासिम की पत्नी से कहा कि खबर अच्छी नहीं है पर उसको यह कहानी पूरी चुपचाप शान्ति से बिना उसके बीच में रोके हुए सुननी चाहिये।

उसने उसको सारी कहानी बतायी और फिर कहा — "तुम्हें उसको अब इस तरह दफ़नाना है जैसे वह अपनी मौत मरा हो। मैं

सोचता हूँ कि यह काम तुम मरजीना पर छोड़ दो और मैं तुम्हारी जितनी भी सहायता कर सकता हूँ करूँगा।"

कासिम की पत्नी के पास सिवाय अली बाबा की बात मानने के और कोई चारा नहीं था। यह सब कह कर अली बाबा वहाँ से चला गया।

मरजीना तुरन्त ही एक डाक्टर के पास गयी और उससे दवा बनाने के लिये कहा। डाक्टर ने पूछा कि कौन बीमार है तो मरजीना ने उसको बताया कि कासिम खुद बीमार है। वे लोग यह तो नहीं जानते कि उसको क्या बीमारी है पर न तो वह कुछ खा रहा है और न ही वह कुछ बोल रहा है। डाक्टर ने दवा तैयार कर के उसे दे दी।

दवा ले कर वह जल्दी से घर आयी। पर अगली सुबह वह उसी डाक्टर के पास फिर गयी और रोते हुए उससे वह दवा माँगी जो वे किसी मरते हुए आदमी को देते थे। वह दवा उससे लेते हुए उसने उससे रोते हुए कहा कि शायद यह दवा भी काम नहीं करेगी और उसका मालिक अब ज़िन्दा नहीं बचेगा।

लोगों ने भी अली बाबा और उसकी पत्नी को कासिम के घर उस दिन कई बार आते जाते देखा तो पर उनको भी कोई खास आश्चर्य नहीं हुआ जब शाम को उन्होंने कासिम के घर से कासिम की पत्नी के रोने की आवाजें सुनी।

अगली सुबह मरजीना बाबा मुस्तफा नाम के एक चमार के पास गयी और उसको एक सोने का सिक्का दिया। उसने पहले तो सिक्के की तरफ देखा फिर बोला — "मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

मरजीना बोली — "मैं तुम्हारी ऑखों पर पट्टी बॉध कर तुमको एक जगह ले जाऊँगी। तुम अपना सिलाई का सामान ले लो और मेरे साथ चलो।"

मुस्तफा को इस तरह जाने पर कुछ हिचक हुई तो वह बोला — "मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम मुझसे कोई गलत काम करवाने वाली हो।" यह सुन कर मरजीना ने एक और सोने का सिक्का उसके हाथ पर रख दिया और बोली — "नहीं नहीं ऐसा नहीं है बस तुम मेरे साथ चलो और डरो नहीं।"

मरजीना मुस्तफा को अपने मालिक कासिम के घर ले गयी और वहॉ ले जा कर उसने उसकी ऑखों की पट्टी खोल कर उससे कहा कि वह उसके मालिक का शरीर जल्दी से सिल दे। और जब वह यह काम कर लेगा तो वह उसको सोने का एक सिक्का और देगी।

जब उसने अपना काम खत्म कर लिया तो उसने उसको तीसरा सोने का सिक्का दिया उसकी ऑखों पर फिर से पट्टी बॉधी और उसको उसके घर छोड़ आयी। उसने उससे इस बात को छिपा कर रखने के लिये कहा।

इस तरह कासिम का शरीर सारी रस्मों के साथ दफ़न कर दिया गया और कोई यह नहीं जान सका कि कासिम का कत्ल किया गया था।

कुछ दिन बाद अली बाबा ने अपना कुछ सामान कासिम के घर पहुँचा दिया। पैसा भी जो उसने डाकुओं से लिया था वह भी एक रात उनको वापस कर दिया। फिर जल्दी ही कासिम की विधवा की शादी अली बाबा से होने की घोषणा कर दी गयी। कासिम की दूकान कासिम के सबसे बड़े बेटे को दे दी गयी।

X X X X X X X

चालीसों डाकू जब अपनी लूट का सामान रखने के लिये अपनी गुफा में लौटे तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि कासिम का शरीर तो वहाँ से चला गया था और उनके सोने के कुछ थैले भी चले गये थे।

उनका सरदार बोला — "अब तो यह पक्का हो गया कि किसी को हमारी इस जगह का पता चल गया है। अगर हमने इसके लिये कोई उपाय नहीं किया तो हमारा तो सारा सामान चला जायेगा।

जब हम यहाँ पहले आये थे तो हमको यहाँ एक आदमी मिला था जिसको हमने मार दिया था। अब कोई दूसरा आदमी आया जिसे हमारा यह भेद मालूम है। हमको इस आदमी पर करीब से ध्यान देना चाहिये।

सरदार कुछ सोच कर फिर बोला — "मैं सोचता हूँ कि तुममें से एक को एक अजनबी यात्री का वेश रख कर शहर में जाना चाहिये और यह मालूम करना चाहिये कि क्या किसी ने किसी अजीब सी मौत के बारे में कुछ सुना है। और अगर सुना है तो वह कौन था और कहाँ रहता था आदि बातों का पता लगाना चाहिये।

यह हमारा सबसे पहला काम होना चाहिये ताकि हम एक अनजान देश में कोई ऐसा काम न करें जिसके लिये हमें बाद में पछताना पड़े जहाँ हम बिना पहचाने जाने इतने दिनों से रह रहे हैं और जहाँ हमको अभी इसी तरीके से अभी और रहना है।

असल में यह तो उस आदमी को केवल डराने धमकाने के लिये जो हमको इतना नुकसान पहुँचा रहा है। या फिर तुम लोग क्या सोचते हो कि क्या हमें उसे मार देना चाहिये।"

एक डाकू बोला — "मैं इस बात से राजी हूँ और मैं यह काम करने के लिये अपने आपको यहाँ इस शहर में सबको बताने के लिये तैयार हूँ। पर अगर मैं अपना काम नहीं कर सका तो फिर मैं इस गिरोह में काम नहीं करूँगा क्योंकि फिर शहर वाले मुझे जान जायेंगे।"

सो यह आदमी वेश बदल कर शहर में चला गया। कुछ देर वहाँ इधर उधर घूमने के बाद वह मुस्तफा की दूकान पर आया जो बाजार की सारी दूकानों में सबसे पहले खुलती थी।

डाकू ने उससे पूछा — "अरे तुम अपनी दूकान इतनी जल्दी खोलते हो? यह बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम्हारी उम्र का आदमी अभी भी सिलाई कर सकता है।"

मुस्तफा बोला — "लगता है कि तुम इस शहर में नये आये हो। मेरी ऑखें तो बहुत ज़्यादा अच्छी हैं। तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि अभी तो मैंने एक मरे हुए आदमी के शरीर के हिस्सों को सिला है हालॉकि तब इतनी भी रोशनी नहीं थी।"

डाकू तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया क्योंकि यही तो वह बात थी जिसे वह जानना चाहता था और यही इस आदमी ने उसको बिना पूछे ही बता दिया था। डाकू ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा — "क्या कहा तुमने एक मरा हुआ आदमी? पर तुमने एक मरे हुए आदमी का क्या सिला? क्या तुमने उस आदमी का कफ़न सिला?"

मुस्तफा ने फिर कुछ सोच समझ कर कहा — "नहीं नहीं। क्या तुम मुझसे वह बात पूछना चाह रहे हो? पर मैं तुमसे कहॅू कि मैं इससे ज़्यादा वह बात किसी को नहीं बताऊॅगा।"

डाकू भी कम होशियार नहीं था। उसने अपनी जेब से तुरन्त ही एक सोने का सिक्का निकाला और उसको देते हुए बोला — "मैं तुम्हारा कोई भेद नहीं जानना चाहता पर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हॅू कि मैं यह बात किसी से नहीं कहॅूगा। क्या तुम मुझे वह घर बता सकते हो जहॉ तुमने वह लाश सिली थी?"

मुस्तफा बोला — "यह बात मैं तुम्हें बता सकता था पर मुझे वहॉ मेरी ऑखों पर पट्टी बॉध कर ले जाया गया था इसलिये मुझे अफसोस है कि यह बात मैं तुम्हें नहीं बता सकता।"

जैसा कि हमने कहा डाकू बहुत होशियार था सो वह फिर बोला — "तुम्हें कुछ तो याद होगा। मैं भी तुम्हारी ऑखों पर पट्टी बॉधता हूॅ तो तुम मुझे वहॉ ले चलने की कोशिश करो।

या फिर सभी को उनकी मेहनत की मजदूरी मिलती है तो जो आदमी तुमको वहॉ ले गया हो उसने तुम्हें कुछ दिया हो। एक सोने का सिक्का या टुकड़ा या फिर और कुछ।" और उसने एक और सोने का सिक्का उसके हाथ पर रख दिया।

अब दो सोने के सिक्के तो मुस्तफा के लिये बहुत बड़ा लालच था। वह उनकी तरफ काफी देर तक देख कर यही सोचता रहा कि वह अब क्या करे पर फिर जल्दी ही उसने उनको अपने बटुए में रखा और बोला — "मैं तुम्हें गारंटी तो नहीं देता पर कोशिश कर सकता हूॅ।"

सो डाकू ने उसकी ऑखों पर अपना रूमाल बॉध दिया और उसको सड़क पर ले चला। मुस्तफा की केवल ऑखें ही बहुत अच्छी नहीं थीं बल्कि उसकी याद भी बहुत अच्छी थी। वह डाकू को कासिम के घर के सामने ले गया जहॉ आजकल अली बाबा रह रहा था।

डाकू ने अली बाबा के घर पर चौक से एक निशान लगाया और मुस्तफा की ऑखों पर से रूमाल खोल दिया। उसने उससे पूछा कि वह घर किसका था। अब क्योंकि मुस्तफा वहॉ रहता नहीं था सो वह यह नहीं बता सका कि वहॉ कौन रहता था। डाकू ने उसे छोड़ दिया और वह खुद वहॉ से जंगल चला गया।

X X X X X X X

कुछ देर बाद मरजीना किसी काम से घर से बाहर निकली और जब वह वह काम कर के घर वापस आयी तो उसने अपने घर पर चौक का एक निशान लगा देखा।

उसको लगा कि या तो कोई उसके मालिक को कुछ नुकसान पहॅुचाना चाहता है या फिर कोई बच्चा इधर उधर खेल खेल में यह निशान लगा गया है सो उसने अपने मालिक को बचाने के लिये अपने मकान के कुछ इधर के और कुछ उधर के मकानों पर किसी से बिना कुछ कहे एक चौक से वैसे ही निशान लगा दिये।

इस बीच डाकू अपने गिरोह में पहॅुच गया और उन सबको यह खुशी की खबर सुनायी कि उसको उस आदमी का मकान मिल गया है जहॉ वह आदमी जिस पर हमको शक है रहता है। यह खबर सुन कर तो उनका सरदार भी बहुत खुश हो गया।

वह बोला "चलो हमको वहॉ जल्दी चलना चाहिये और उस आदमी को और उसके घर को पता करना चाहिये।"

सो उन्होंने दो दो तीन तीन के झुंड बनाये और सारे शहर में बिखर गये। वह डाकू जो सुबह अली बाबा के घर आया था सरदार को साथ ले कर अली बाबा के घर चल दिया।

जब वह अली बाबा के घर आया तो वह यह देख कर तो पशोपेश में पड़ गया कि जिस तरीके से वह एक मकान पर निशान लगा कर गया था वैसा ही निशान वहॉ कई घरों पर लगा हुआ था।

यह देख कर तो वह उस मकान को किसी तरह भी नहीं पहचान सका जिस पर वह निशान लगा कर गया था। सो सब लोग उस दिन गुफा में वापस आ गये। निशान लगाने वाले डाकू को उसकी लापरवाही पर मार दिया गया।

अब यह काम एक दूसरे आदमी को सौंपना था तो एक दूसरा आदमी इस काम को करने के लिये तय किया गया। उसने भी वही रास्ता अपनाया जो उसके पहले वाले डाकू ने अपनाया था। यानी उसने भी मुस्तफा को रिश्वत दी पर इस बार उसने लाल चौक से यह निशान लगाया।

अब क्योंकि एक बार मरजीना को पता चल गया था सो वह सावधान थी वह बार बार घर के बाहर निकल कर देखती रहती थी। इस बार जब वह घर के बाहर निकली तो उसने अपने घर पर लाल चौक से बना निशान देखा सो उसने इस बार भी अपने घर के दोनों तरफ के घरों पर वैसे ही निशान बना दिये।

दूसरे डाकू के कहने पर बाकी के सारे डाकू फिर पहले की तरह से उसका निशान लगाया घर देखने के लिये गये तो वहॉ इस बार भी वैसा ही निशान कई घरों पर लगा पाया। एक बार फिर वे उस घर को नहीं पहचान सके। इस दूसरे डाकू को भी मार डाला गया।

उनका सरदार इस तरह से अपने दो अच्छे साथियों को मार डालने पर बहुत दुखी हुआ सो इस बार उसने यह मामला खुद अपने हाथ में लेने का निश्चय किया।

वह खुद भी मुस्तफा के पास गया और मुस्तफा ने उसको वह मकान दिखाया। इस बार उसने उस मकान पर कोई निशान नहीं लगाया बस केवल उसकी जगह देख ली कि वह कहॉ था।

अब अपने प्लान के अनुसार उसने अपने गिरोह को **19** गधे और **39** बड़े चमड़े के बर्तन खरीदने के लिये कहा। जिनमें से एक तेल से भरा हुआ होना चाहिये और बाकी **38** खाली हों। उसको उन बर्तनों के मुॅह थोड़े बड़े करने पड़े क्योंकि उनके मुॅह इतने बड़े नहीं थे कि उसमें से हो कर एक आदमी उसमें बैठ जाये और थोड़ी सी जगह उसके सॉस लेने के लिये भी बच जाये।

उसने **38** बर्तनों को बाहर से तेल चुपड़ा और उनमें से **37** बर्तनों में अपने आदमी बिठाये और एक तेल का बर्तन अपने **19** गधों पर लादा और अली बाबा के घर की तरफ चल दिया।

X X X X X X X

ये **38** डाकू शाम को शहर में आये और सीधे अली बाबा के घर पहुँचे। अली बाबा अपना शाम का खाना खा कर बाहर बैठा हुआ था।

सरदार उसके पास गया और बोला — "मैं एक तेल का व्यापारी हूँ। इस शहर में कल तेल बेचने के लिये आया हूँ। मुझे यहाँ आने में कुछ देर हो गयी तो मुझे पता नहीं कि अब मैं यहाँ कहाँ ठहरूँ। अगर आपको कोई परेशानी न हो तो मैं रात भर के लिये यहाँ ठहर जाऊँ। मैं इसके लिये आपका बड़ा कृतज्ञ रहूँगा।"

अली बाबा उसको डाकू की तरह से नहीं पहचान सका सो उसने उसका अपने घर में स्वागत किया। उसने अपने घर का दरवाजा भी खोल दिया ताकि उसके गधे अन्दर आ सकें।

उसने अपने एक नौकर को उनको खाना देने के लिये भी कहा। फिर वह मरजीना के पास गया और उससे मेहमान के लिये खाना बनाने के लिये कहा।

अली बाबा ने देखा कि उसने अपने गधे उसके ऑगन में खड़े कर दिये थे और वह खुद अपने सोने के लिये घर के बाहर जगह देख रहा था। यह न जानते हुए कि वह उसको मार डालेगा वह बाहर गया और उसको अन्दर कमरे में बुला लाया। सरदार भी कई बार ना ना करने के बाद उसके साथ उसके कमरे में आ गया।

अली बाबा ने उसको खाना खिलाया और फिर उससे पूछा कि उसको किसी और चीज़ की जरूरत तो नहीं थी। उसने कहा "नहीं। मुझे किसी और चीज़ की जरूरत नहीं है।"

अली बाबा फिर अन्दर गया और मरजीना को अपने मेहमान की देखभाल करने के लिये कहा और कहा कि अगले दिन वह सुबह जल्दी नहायेगा सो वह उसके पहनने के कपड़े रात को ही निकाल कर उसके नौकर अब्दुल्ला को दे दे।

उसी समय डाकुओं का सरदार भी यह बहाना बनाते हुए उठ कर अपने गधों के पास जाने लगा जैसे वह उनको देखने के लिये जा रहा हो।

वहॉ जा कर उसने पहले बर्तन से ले कर **37**वें बर्तन तक जा कर अपने सब आदमियों से कहा कि जब वह खिड़की के बाहर पत्थर फेंकेगा उसी समय तुम लोग अपने अपने चाकुओं के साथ बर्त न में से बाहर निकल आना। तभी मैं भी आ कर तुम लोगों से मिल जाऊॅगा।

इसके बाद वह मरजीना के पास आया जो उसको सोने के लिये उसके कमरे तक ले गयी। उसने भी तुरन्त ही अपनी रोशनी बुझायी और उन्हीं कपड़ों में आ कर लेट गया जिनको पहन कर वह वहॉ आया था।

मरजीना ने अली बाबा के सुबह पहनने वाले कपड़े अब्दुल्ला को दिये और फिर कुछ पकाने के लिये रसोईघर में गयी। लेकिन

जैसे ही उसने बर्तन आग पर चढ़ाया कि उसका लैम्प बुझ गया। अब मैं क्या करूँ।

अब्दुल्ला बोला — "तुम इतनी चिन्ता क्यों करती हो। इस व्यापारी के तेल से भरे इतने सारे बर्तन रखे हैं जा कर उनमें से एक बर्तन में से थोड़ा सा तेल निकाल लो।"

"ओ तुम्हारी इस सलाह के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।" कह कर वह बाहर ऑगन की तरफ गयी जहॉ व्यापारी के बर्तन रखे थे और जैसे ही वह एक बर्तन के पास आयी तो उस बर्तन में से एक आवाज आयी "क्या समय हो गया?"

हालॉकि वह डाकू बहुत धीरे से बोला था पर फिर भी मरजीना ने उसे सुन लिया। एक तेल के बर्तन में से आदमी की आवाज सुन कर वह सावधान हो गयी।

उसको लगा कि कोई ऐसा खतरा था जिसमें वे सब फॅस गये थे। सो उसने इस बात को छिपा कर रखा और धीरे से उसको जवाब दिया "अभी नहीं पर जल्दी ही।" उसने यह जवाब हर बर्तन में बैठे हर आदमी को दिया जब तक वह आखिरी बर्तन तक नहीं आ गयी जिसमें तेल रखा था।

अब उसको पता चल गया था कि उसके मालिक ने एक तेल के व्यापारी की बजाय **38** डाकुओं को अपने घर में जगह दे दी थी।

उसने तेल के बर्तन में से तेल निकाला अपना लैम्प जलाया और एक बहुत बड़े बर्तन में पानी उबलने के लिये रख दिया।

जैसे ही वह पानी उबलने लगा उसने काफी पानी तेल के हर बर्तन में जिन जिन में आदमी बैठा हुआ था उसको मारने के लिये डाल दिया। यह कर के वह फिर रसोईघर में आयी लैम्प बुझाया और यह देखने के लिये वहॉ थोड़ी देर चुपचाप खड़ी रही कि देखूँ अब आगे क्या होता है।

कुछ मिनट बाद ही सरदार ने देखा कि अब घर में कोई रोशनी नहीं हो रही है कोई आवाज भी नहीं है सो उसने इस आशा में कुछ पत्थर के टुकड़े अपने तेल के बर्तनों की तरफ फेंके कि उसके आदमी उन बर्तनों में से बाहर निकल आयेंगे।

पर उनमें से तो कोई भी बाहर नहीं निकला। यह देख कर तो उसको बहुत डर लगा। वह तुरन्त ही अपने बिस्तर से उठा और ऑगन में अपने आदमियों को देखने के लिये पहुँच गया। उसने देखा कि वहॉ तो वे सब उन बर्तनों में मरे पड़े हैं। डर के मारे वह घर के पीछे के दरवाजे से निकल कर बाहर भाग गया।

मरजीना खड़ी खड़ी यह सब देख रही थी। यह देख कर वह बहुत खुश हुई और फिर सोने चली गयी।

अली बाबा अगले दिन सुबह के लिये जैसा कि उसने कहा था कुछ जल्दी ही उठ गया और नहाने चला गया। उसको रात में हुई घटनाओं का कुछ भी पता नहीं था। लेकिन जब वह नहा कर

वापस लौट रहा था तो उसने देखा कि व्यापारी के तेल के बर्तन तो अभी भी बाहर ही रखे हुए हैं।

उसने इस बारे में मरजीना से पूछा तो मरजीना बोली — "मालिक अब मैं आपको वह दिखाती हूँ जो आपको देखना ही चाहिये। बस आप मेरे पीछे पीछे आइये।"

वह उसको ऑगन में ले गयी और उससे पहले बर्तन में झॉकने कि लिये कहा और कहा कि वह देख कर बताये कि क्या उसमें तेल भरा था। जैसे ही उसने उस बर्तन में झॉका तो वह तो डर के मारे चिल्ला पड़ा।

मरजीना बोली — "मालिक डरने की जरूरत नहीं है। यह आदमी अब इस घर में किसी का कोई नुकसान नहीं कर सकता।"

"इसका क्या मतलब है मरजीना?"

मरजीना बोली — "मालिक इतनी ज़ोर से मत बोलिये कि दूसरे लोग यहॉ आ जायें। बस चुपचाप रहिये और दूसरे बर्तनों में भी झॉक कर देखिये।"

उसने दूसरे बर्तनों में भी झॉक कर देखा तो देखा कि हर बर्तन में तेल की बजाय एक आदमी बैठा है। यह देख कर तो उसका आश्चर्य और बढ़ गया। उसने मरजीना से पूछा "और व्यापारी का क्या हुआ।"

मरजीना बोली — "आप अपने कमरे में आइये तब मैं आपको उसकी सारी कहानी बताती हूँ कि वह कौन था। अभी तो आपके नाश्ते का समय हो गया।"

कह कर मरजीना उसका नाश्ता लाने चली गयी। जब वह नाश्ता ले कर आयी तो अली बाबा ने उससे कहा कि नाश्ता करने से पहले वह उस व्यापारी की कहानी सुनना चाहेगा। तब मरजीना ने उसको पहले दिन की सब घटनाओं का ही नहीं बल्कि उनके घर पर चौक से निशान लगाने से ले कर रात तक का हाल बताया।

उसने यह भी कहा कि हो सकता है कि यह व्यापारी वही आदमी हो जो आपके मकान पर निशान लगा गया हो इसलिये अब उसको अपनी हिफाजत अपने आप करनी चाहिये।

अली बाबा उसके मुँह से यह सब सुन कर इतना खुश हुआ कि उसने उसको अपनी गुलामी से आजाद कर दिया और बोला — "मैं तुमको इसका इनाम जरूर दूँगा मरजीना। तुमने मेरी जान बचायी है। मेरी यह जान अब तुम्हारी है।

पर अब हमको इन सबको इस तरह दफ़न करना है कि किसी को यह पता न चले कि ये कहाँ हैं। मैं और अब्दुल्ला इस काम में तुम्हारी सहायता करेंगे।"

उन्होंने सबने मिल कर उन सबको अपने बागीचे में गाड़ दिया और उन गधों को धीरे धीरे कर के बाजार में बेच दिया।

X X X X X X X

डाकुओं का सरदार अली बाबा के घर से भाग कर सीधा अपनी गुफा में आया क्योंकि वह यह सोच ही नहीं सका कि वह वहॉ से और कहॉ जाये और इस अली बाबा का क्या करे।

कुछ समय तक तो वह अपने गिरोह के लिये रोता रहा फिर वह सो गया। अगले दिन उसके दिमाग में एक और तरकीब आयी। वह अपनी तरकीब के अनुसार तैयार हुआ और शहर जा कर एक खान[11] के घर ठहर गया।

कुछ देर बाद उसने खान से शहर की खबर पूछी। खान ने उसको शहर की कई खबरें बतायीं पर वे सब खबरें उसके लिये बेकार थीं। जो वह सुनना चाहता था उसको उसकी कोई खबर नहीं थी जिसका मतलब यह था कि अली बाबा ने वह खबर छिपा कर रखी हुई थी सो लोगों को उस खबर का पता ही नहीं था।

उसने अली बाबा के बेटे की दूकान के सामने अपनी एक दूकान खोल ली और वहॉ उसने जो कुछ भी कीमती सामान इकट्ठा किया था वह बेचना शुरू कर दिया। उसने अपना नाम कोगिया हुसैन[12] रख लिया।

बहुत जल्दी ही उसने अपने पड़ोसी दुकानदारों से दोस्ती कर ली। उसने अली बाबा के बेटे से भी दोस्ती कर ली। इधर उधर देखने पर उसने अली बाबा को भी पहचान लिया। उसने उसको

[11] Normally the people of Afgan are called Khan. They are all Muslims.

[12] Kogiya Hussain

कई भेंटें दे कर उससे दोस्ती कर ली और उसको खाने के लिये भी बुलाया।

एक दिन अली बाबा के बेटे ने उसके इन अहसानों का बदला उसको अपने घर खाना खाने के लिये बुलाया। उसने अपने पिता से भी यह बात बतायी।

यह सुन कर अली बाबा बहुत खुश हुआ वह बोला — "शुक्रवार को बाजार बन्द रहता है। शाम को तुम उसको घुमाने के लिये ले कर जाओ और जब तुम लौटो तो तुम मेरे दरवाजे से हो कर गुजरना तो मैं तुम्हें बुला लूँगा। इस तरह से हम उसको एक अच्छा आश्चर्य देंगे। वह भी खुश हो जायेगा। मैं मरजीना से बोल दूँगा कि वह उसके लिये भी खाना बना लेगी।"

अगले दिन अली बाबा का बेटा हुसैन को घुमाने के लिये ले गया फिर जब वह लौट रहा था तो उसने अली बाबा के घर का दरवाजा खटखटाया और उससे कहा — "यह मेरे पिता का घर है। जब मैंने उनको अपनी दोस्ती के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें साथ ले कर आऊँ।"

हालाँकि हुसैन का तो अपना उद्देश्य पूरा हो रहा था पर फिर भी वह काफी ना नुकुर करता रहा। पर इतनी ही देर में नौकरानी ने दरवाजा खोल दिया और अली बाबा उसको जबरदस्ती घर के अन्दर ले गया।

काफी बातचीत के बाद हुसैन फिर से घर जाने के लिये तैयार हुआ तो अली बाबा ने उससे रुक जाने के लिये और अपने साथ खाना खाने के लिये कहा।

हुसैन बोला — "मैं आपकी बेइज़्ज़ती नहीं करना चाहता पर मैं कुछ खास खाना खाता हूँ जैसे बिना नमक का। इसलिये मैं अपने घर ही खाना खाना ज़्यादा पसन्द करता हूँ।"

अली बाबा बोला — "यह कोई बात नहीं है। हम आपके लिये यहाँ बिना नमक का खाना बनवा देंगे। पर आप आज शाम का खाना हमारे साथ खाने के लिये यहाँ रुक रहे हैं। मैं अभी आता हूँ।"

कह कर अली बाबा रसोईघर में गया और मरजीना को मेहमान के लिये बिना नमक का खाना बनाने के लिये कहा। मरजीना यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी।

उसने पूछा — "ऐसा आपका कौन सा मेहमान है जो खाने में नमक नहीं खाता।"

अली बाबा बोला — "तुम उसकी चिन्ता मत करो बस उसके लिये वैसा ही खाना बना दो।"

पर मरजीना से तो यह देखे बिना नहीं रहा गया कि वह कौन सा मेहमान है जिसको बिना नमक का खाना चाहिये। सो जब उसने सब कुछ बना लिया तो वह उस आदमी को देखने के लिये बाहर आयी।

उसको तो वह देखते ही पहचान गयी कि यह तो उन्हीं **38** डाकुओं का सरदार था जिनको कुछ दिन पहले उसने बर्तन में गर्म पानी डाल कर मारा था।

उसने उसके कपड़ों में छिपी हुई कटार[13] भी देख ली। उसने अपने मन में कहा "तो इसलिये वह हमारा नमक नहीं खा रहा क्योंकि उसे हमारे मालिक को मारना है पर मैं इसको छोड़ूँगी नहीं।"

सो उसने एक प्लान बनाया। जब वे सब खाना खा चुके और अब्दुल्ला उनके लिये मिठाई लेने के लिये अन्दर आया तो उसने उससे कहा कि मिठाई वह खुद ले जायेगी। वह खुद मिठाई ले कर बाहर आयी और उसे मेज पर रख दिया।

फिर उसने एक छोटी मेज उठायी और उस पर तीन गिलास रख कर उसे अली बाबा के पास रख दिया और खुद अब्दुल्ला के साथ अपना खाना खाने अन्दर चली गयी।

हुसैन ने सोचा यह तो बाप बेटा दोनों को मारने का बड़ा अच्छा मौका है। जब ये लोग पी कर बेहोश से हो जायेंगे तब मैं इन दोनों को मार दूँगा।

जल्दी ही खाना खा कर मरजीना ने एक नाच वाली पोशाक पहनी और अब्दुल्ला से भी कहा कि वह भी उसके साथ नाचने के लिये तैयार हो जाये। वह अपना ढोल[14] भी साथ ले ले। उसने कहा

[13] Translated for the word "Dagger" – see its picture above.

[14] Translated for the word "Tabor" – tabor is a kind of drum which is beaten by one hand only.

आज हम वैसे ही नाचेंगे जैसे कभी कभी हम अपने मालिक को खुश करने के लिये नाचा करते हैं।

सो दोनों नाचने के लिये तैयार हो कर वहॉ आ गये। उन दोनों को इस तरह तैयार देख कर अली बाबा बोला — "आओ आओ। और हुसैन को दिखाओ कि तुम हमारे लिये क्या कर सकते हो।"

फिर वह हुसैन से बोला — "ये दोनों मेरे नौकर हैं – रसोइया और घर की देखभाल करने वाला। ये तुम्हारा मन बहलाना चाहते हैं। मुझे आशा है कि तुमको बुरा नहीं लगेगा।"

हालॉकि हुसैन अपने प्रोग्राम में इस रद्दो बदल की आशा नहीं कर रहा था क्योंकि वह उन दोनों को मारने का यह मौका हाथ से जाने देना नहीं चाहता था पर उसे यह दिखाना ही पड़ा कि वह इस मन बहलाव के लिये उनका कितना कृतज्ञ था और बल्कि उसको अपनी खुशी ही जाहिर की कि वह उनके नाच को खुशी से देखेगा।

मरजीना ने कई नाच नाचे सब बहुत अच्छे थे। फिर उसने अपना बड़ा वाला चाकू निकाल लिया और उसको ले कर नाचना शुरू किया। कभी वह उसको एक की छाती पर रख देती तो कभी दूसरे की छाती पर। पर अधिकतर वह चाकू अपनी ही छाती की तरफ किये रही।

फिर उसने अब्दुल्ला से उसका ढोल ले लिया और अपने दॉये हाथ में चाकू अभी भी पकड़े हुए बॉये हाथ से उसकी दूसरी तरफ

अली बाबा की तरफ की। अली बाबा और उसके बेटे ने एक एक सोने का सिक्का उसके ढोल में डाल दिया।

उसके बाद वह हुसैन के पास गयी तो हुसैन ने भी एक सोने का सिक्का निकालने के लिये अपनी जेब में हाथ डाला कि तभी उसने वह चाकू उसके सीने में घोंप दिया।

अली बाबा और उसका बेटा दोनों ही यह देख कर आश्चर्य से दंग रह गये और चिल्ला पड़े — "मरजीना यह तूने क्या किया। तूने तो हमारे परिवार को ही नष्ट कर दिया।"

मरजीना बोली — "नहीं जनाब यह काम मैंने आपके परिवार को नष्ट करने के लिये नहीं बल्कि आपके परिवार को बचाने के लिये किया है। यह देखिये।" कह कर उसने उसके कपड़ों में छिपा हुआ चाकू अली बाबा को दिखाया।

मरजीना आगे बोली — "अगर आप ध्यान से देखें तो आप देखेंगे कि यह वही आदमी है जो हमारे यहॉ कुछ दिन पहले तेल का व्यापारी बन कर आया था। यह आपको यहॉ मारने के लिये आया था इसी लिये यह आपका नमक भी खाना नहीं चाहता था।

मुझे यह शक तभी हो गया था जब आपने कहा था कि आपका यह मेहमान आपके घर में नमक वाला खाना खाना नहीं चाहता था। अब आप देख सकते हैं कि मेरा शक बेबुनियाद नहीं था।"

अली बाबा दोबारा मरने से बच गया था। वह मरजीना का बहुत कृतज्ञ था। वह बोला — "मरजीना पहले मैंने तुझे आजादी दी

थी और कहा था कि मेरी यह कृतज्ञता तेरे लिये यहीं नहीं रुकने वाली। आज उसको साबित करने के लिये मैं तुझे अपने बेटे की बहू स्वीकार करता हूँ।"

अली बाबा का बेटा भी उसको बहुत चाहता था सो वह इस शादी के लिये तैयार हो गया। उन्होंने हुसैन की लाश गाड़ दी और किसी को उसका पता भी नहीं चला।

कुछ समय बाद अली बाबा ने अपने बेटे की शादी मरजीना से बड़ी धूमधाम से की। शादी के बाद काफी समय तक वह फिर उस गुफा में नहीं गया। क्योंकि उसने सोचा कि दो डाकू तो अभी भी ज़िन्दा थे। क्योंकि उसको उनके मारे जाने की खबर ही नहीं थी।

पर फिर वह वहाँ गया तो देखा कि हुसैन की मौत के बाद खजाना तो अनछुआ रखा है। वह वहाँ से काफी पैसा तो ले आया फिर उसने वह गुफा अपने बेटे को आगे के लिये दिखा दी।

2 डाकुओं को लूटा[15]

ऐसी ही एक कहानी भारत के काश्मीर प्रान्त में भी कही जाती है। तो लो पढ़ो ऐसी ही एक कहानी अब भारत से।

बहुत पुरानी बात है कि एक बहुत बड़ा राजा था जिसकी अमीरी और बड़ापन देख कर लोग उससे जलते थे। बहुत सारे राजाओं ने तो उससे लड़ने की भी कोशिश की पर हार गये। इससे उसको ऐसा लगने लगा कि उसको कोई जीत नहीं सकता सो वह अपने राज्य और सेना की तरफ से लापरवाह हो गया।

इस बीच एक दूसरा ताकतवर राजा अपनी सेना को बहुत अच्छी तरह से ट्रेन कर रहा था। उसने देखा कि अब वह राजा अपने राज्य की तरफ से काफी लापरवाह हो गया है तो उसने उस राजा पर हमला करने का फैसला किया।

दोनों सेनाऐं एक बड़े से मैदान में मिलीं और कई दिन तक बड़ी बहादुरी से लड़ती रहीं। कुछ समय तक तो लड़ाई बराबर की सी लगती रही पर फिर आखीर में वह बड़ा और अमीर राजा मारा गया और उसकी सेना इधर उधर बिखर गयी।

---

[15] The Robbers Robbed (Tale No 45) – a folktale of Kashmir, India. Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887.
This book is available on Internet :
https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false .

अजनबी राजा उसके राज्य में घुसा और उसकी जगह राज करने लगा।

राज्य में आ कर उसका पहला काम यह था कि उसने पुराने राजा की रानी और उसके दोनों बेटों को राज्य से बाहर निकाल दिया। उसने उनको बिना कुछ दिये ही बाहर भेज दिया। रानी एक सेर चावल रोज के लिये सारा दिन चावल कूटती थी जबकि उसके दोनों बेटे भीख माँग कर जो कुछ मिल जाता था ले आते थे।

एक दिन रानी ने अपने बड़े बेटे को जंगल से कुछ लकड़ी काटने के लिये कहा ताकि वह उसको बेच सके। एक दिन जब वह लड़का जंगल में लकड़ी काट रहा था तो उसने कुछ दूर पर एक कारवाँ जाता देखा जिसमें कई आदमी ऊँट और खच्चर थे। सब ऊँटों और खच्चरों पर सामान लदा हुआ था। वास्तव में वे डाकू थे।

लड़का उनको देख कर डर गया क्योंकि उसको लगा कि अगर उनको यह पता चल गया कि वह यहाँ है तो शायद वे उसको मार देंगे। सो अपने आपको छिपाने के लिये वह एक पेड़ पर चढ़ गया। वह कारवाँ उसी जंगल में उसी पेड़ के पास में बने एक मकान के पास जा कर रुक गया।

उसने देखा कि लोगों ने अपने ऊँटों और खच्चरों से सामान उतार कर उस मकान में रखा। उस मकान का दरवाजा किसी जादू से अपने आप ही खुल और बन्द हो जाता था। वे जादू के शब्द

उसने साफ साफ सुन लिये थे। उसने यह सब देखा और वे जादू के शब्द याद कर लिये।

जब वे डाकू वहॉ से चले गये तो उसने उस मकान में खुद घुसने का विचार किया। सो अगले दिन जब डाकू वहॉ से चले गये वह पेड़ से उतरा और मकान की तरफ गया और वे जादू के शब्द बोले जो उसने पहले दिन डाकुओं के मुॅह से सुने थे।

मकान का दरवाजा तुरन्त खुल गया और उसने उस घर में कदम रखा। उसने उसमें बहुत बड़ा खजाना देखा। उसने देखा कि सोने चॉदी और कीमती पत्थरों के बड़े बड़े ढेर लगे हुए हैं। बढ़िया कारीगरी की हुई चीज़ें भी वहॉ रखी हुई हैं।

जितना खजाना उससे हो सका उतना खजाना उसने पास में चर रहे एक ऊॅट पर लाद लिया और फिर से वही जादू के शब्द बोल कर घर का दरवाजा बन्द किया और अपने घर चला गया। उसकी मॉ उसके उस दिन के काम से बहुत खुश हुई।

उसके अगले दिन उसके छोटे भाई ने भी सोचा कि वह भी उस जंगल जायेगा और अपनी किस्मत आजमायेगा। सो उसने भी जादू के वे शब्द याद कर लिये जिनसे उस घर का दरवाजा खुलता और बन्द होता था और फिर वह भी उसी ओर चल दिया।

जंगल पहुॅच कर वह भी उस घर के पास वाले पेड़ पर चढ़ गया और डाकुओं के वहॉ आने का बड़ी धीरज से इन्तजार करने लगा। शाम को वे लोग बहुत सारा खजाना ले कर वहॉ आये।

मकान के पास पहुँच कर उन्होंने उन्हीं जादू के शब्दों से उसका दरवाजा खोला।

पर अन्दर घुस कर उनको आश्चर्य भी बहुत हुआ और गुस्सा भी बहुत आया जब उन्होंने यह देखा कि उनकी गैरहाजिरी में कोई वहाँ आया था और उनका कुछ सामान चुरा कर ले गया था।

उन्होंने उस आदमी के ऊपर जिसने भी यह काम किया था कई भयानक कसमें खायीं कि छोटा भाई तो उनको सुनते ही डर गया और अपने इस आने पर पछताने लगा। सुबह को वे डाकू वहाँ से चले गये।

जैसे ही वे वहाँ से चले गये वैसे ही वह पेड़ से उतरा और उस मकान के सामने जा कर वे जादू के शब्द बोले जिनसे दरवाजे को खुलना था। शब्दों ने काम किया और दरवाजा खुल गया। पर जैसे ही वह उसके अन्दर घुसा दरवाजा उसके पीछे बन्द हो गया। लड़का चिल्लाता रहा जब तक कि उसकी आवाज फट नहीं गयी कि वह दरवाजा किसी तरह से खुल जाये और वह वहाँ से बाहर निकल जाये पर वह दरवाजा खुल कर ही नहीं दिया।

जाहिर है कि लड़के ने उन जादू के शब्दों में से कुछ शब्द जोड़े कुछ निकाले पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। दरवाजा नहीं खुलना था नहीं खुला।

अब वह लड़का अपनी बदकिस्मती से उस मकान के अन्दर ही बन्द रहा। जब तक वह वहॉ बन्द रहा और उन डाकुओं का इन्तजार करता रहा। अजीब अजीब ख्याल उसके मन में आते रहे।

वह बस यही सोचता रहा कि वे डाकू जब शाम को लौटेंगे और उसको वहॉ देखेंगे तो उसके साथ क्या करेंगे। बच निकलना तो वहॉ से नामुमकिन सा ही था। वह अपनी बनायी हुई जेल में खुद ही फॅस गया था और अब उसको अपने किये का फल भुगतना था।

शाम को उसे डाकुओं के आने की आवाज सुनायी दी। दरवाजा खुला और डाकू लोग अन्दर आये। जैसे ही इन्होंने इस लड़के को एक कोने में डरा हुआ और रोता हुआ बैठा देखा तो उनके चेहरे पर एक जंगली किस्म की मुस्कुराहट आ गयी।

उसको देखते ही उनके मुॅह से निकला — "ओह तो यह है हमारा चोर। इसी ने हमारे घर में घुसने की जुर्रत की है। हम इसके टुकड़े टुकड़े कर देंगे और इस मकान के चारों तरफ फेंक देंगे ताकि दूसरे लोग यहॉ तक आने में डरें।

उन्होंने यह सचमुच में ही किया क्योंकि वे तो खून के प्यासे थे उनको किसी से कोई हमदर्दी नहीं थी और जा कर सो गये। अगले दिन सुबह वे लोग रोज की तरह फिर अपने काम पर चले गये जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं था।

जब डाकू अपने घर से चले गये तो बड़ा भाई अपने छोटे भाई की खोज में वहॉ आया ताकि वह उसकी खजाना ले जाने में सहायता कर सके।

पर वह तो दुख के मारे पागल सा हो गया जब उसने अपने भाई के शरीर के टुकड़े उस जगह के आस पास पड़े देखे। वह बोला — "उनको इसका फल भुगतना पड़ेगा।"

फिर उसने जादू के शब्दों का इस्तेमाल कर के उस मकान का दरवाजा खोला। उसने वहॉ से सबसे ज़्यादा कीमती चीज़ें इकट्ठी कीं जो उससे ली जा सकीं और उन्हें एक बोरे में भरा। उसके बाद उसने एक और बोरे को उस मकान के बाहर खाली किया और उसमें अपने भाई की लाश के टुकड़ों को भरा।

उसके बाद उसने वही जादू के शब्द बोल कर घर का दरवाजा बन्द किया दोनों बोरे अपने कन्धे पर लादे और घर चल दिया। घर आ कर उसने अपने भाई की लाश को सिला और एक कपड़े में बॉध कर उसे दफना दिया।

उस शाम जब डाकू घर लौटे तो जो कुछ उनकी गैरहाजिरी में उनके घर में हुआ था उसे देख कर वे फिर बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने पक्का इरादा कर लिया कि वे चोर को ढूँढ कर ही दम लेंगे। वे जब तक कोई दूसरा डाका नहीं डालेंगे जब तक उस चोर को नहीं ढूँढ लेंगे।

वे लोग शहर गये और बाजार में अलग अलग जगहों पर रहने लगे ताकि वे यह देख सकें कि उनका चोर वहीं कहीं रह रहा था या नहीं। वे किसी ऐसे आदमी की तलाश में थे जो एक रात में ही अमीर हो गया हो।

उनमें से एक डाकू एक दर्जी से मिला जिसने एक छोटे राजकुमार के दफन के लिये कपड़े सिले थे जिसको किसी ने बहुत बुरी तरह से काट दिया था। उसी से उसको यह भी पता चला कि उसके मॉ और भाई दोनों रात भर में ही अमीर बन गये थे। पर ऐसा कैसे हुआ यह वह नहीं बता सका।

कुछ लोगों ने कहा कि वे शाही खानदान के थे पर किस खानदान के यह वह नहीं जानता था।

सो डाकू गया और उसने उस घर का पता लगाया जिसमें रानी और राजकुमार रहते थे। उसने उस घर पर निशान लगा दिया ताकि वह उसे याद रख सके। राजकुमार ने यह देखा तो उसको कुछ पता चल गया कि उस निशान का क्या मतलब था सो उसने आस पास के दूसरे घरों पर भी वैसा ही निशान लगा दिया।

ऐसा कर के उसने डाकुओं को बहका दिया। जब दोबारा वह डाकू वहॉ आया तो बहुत सारे घरों पर वैसा ही निशान देख कर चक्कर खा गया और असली मकान को नहीं पहचान सका।

उन्होंने आपस में कहा ऐसे काम नहीं चलेगा। हमें उस दरजी से ठीक से पूछना पड़ेगा कि वे लोग कहॉ रहते हैं। फिर उनके घर जा

कर उनसे दोस्ती बढ़ानी पड़ेगी। इस तरह से हम उस राजकुमार को जल्दी ही मार सकेंगे।

सबने इस प्लान को माना और डाकुओं के गिरोह के सरदार को इस काम के लिये चुना गया। उसने जल्दी ही उनके घर का पता ठिकाना मालूम कर लिया और राजकुमार और उसकी मॉ से दोस्ती कर ली। अब वह उनके घर कभी भी जा सकता था।

एक दिन रानी ने उसके कोट के अन्दर एक छुरा छिपा हुआ देख लिया और इससे और एक दो दूसरी चीज़ों से जो उसने अलग अलग समय पर देखीं उसको यह पता चल गया कि यह आदमी दोस्त नहीं था बल्कि एक दुश्मन और डाकू था।

उसने उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश की सो एक दिन उसने अपने बेटे और उसके दोस्त से कहा कि वह उनके सामने नाचना चाहती है। वे लोग राजी हो गये। जब वह उनके सामने नाचने आयी तो उसके एक हाथ में एक तलवार थी जिसको वह बड़े शानदार तरीके से हिला हिला कर नाच रही थी।

नाचते नाचते एक बार वह डाकू की तरफ बढ़ी और धीरे धीरे उसकी तरफ चलते हुए गाने पर ठीक से नाचते हुए मौका देख कर उसने डाकू का सिर काट दिया।

यह देख कर राजकुमार डर के मारे चिल्लाया और बोला — "मॉ यह तुमने क्या किया?"

रानी बोली — "बेटा मैंने सिर्फ तुम्हारी जगह बदली है। बजाय इसके कि वह तुम्हें मारता मैंने उसे मार दिया। देखो तुम उसके कोट के नीचे देखो वहॉ उसका छुरा छिपा हे जिससे वह तुम्हें मार सकता था। बेटे वह तुम्हारा दोस्त नहीं था वह वह डाकू था जिसने तुम्हारे भाई को मारा था। आज मैंने उसे मार दिया।"

राजकुमार बोला — "मॉ मैं तुम्हारा कर्ज कैसे चुका पाऊॅगा। तुमने मेरी सुरक्षा पर ऐसी नजर रखी। मुझे तो इस आदमी में कभी कोई खराबी दिखायी ही नहीं दी। मैंने उसके पास यह छुरा कभी नहीं देखा। यह जरूर ही अपने खजाने का हिस्सा लेने के लिये आया होगा।"

डाकुओं ने जब अपने सरदार की मौत के बारे में सुना तो उन्होंने बचा हुआ खजाना आपस में बॉट लिया और दूसरी जगह रहने चले गये। बाद में राजकुमार की शादी हो गयी और वह डाकुओं के उस लूटे हुए खजाने से मालामाल हो गया।

3 तेरह डाकू[16]

अली बाबा और चालीस चोर जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि इटली के किसी शहर में दो भाई रहते थे – एक अमीर चमार था और दूसरा गरीब किसान।

एक बार वह किसान अपने खेत से वापस लौट रहा था कि उसने **13** आदमी एक ओक के पेड़ के नीचे देखे। हर एक के पास बहुत ही भयानक चाकू थे जो किसी को भी डराने के लिये काफी थे।

वे चाकू देख कर किसान ने सोचा कि लगता है ये तो डाकू हैं तो वह वहीं छिप गया। वह डर गया था कि वे डाकू कहीं उसे मार न दें।

उसने देखा कि वे सब उस ओक के पेड़ के पास गये। फिर उसने उनके सरदार को कहते सुना "खुल जा ओक"। सुन कर उस ओक के पेड़ ने एक जॅभाई ली और वहॉ एक दरवाजा खुल गया। एक एक कर के सारे डाकू उस दरवाजे के अन्दर चले गये।

[16] The Thirteen Bandits (Story No 137) – a folktale from Italy from its Basicalata area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

वह किसान अपनी छिपने की जगह से सब देखता रहा। कुछ देर बाद वे डाकू एक एक कर के वहॉ से बाहर निकल आये। उनका सरदार सबसे बाद में बाहर आया।

बाहर आ कर उसने अपने सब साथियों को गिना और फिर बोला "बन्द हो जा ओक" और ओक के पेड़ में जो दरवाजा खुला था वह बन्द हो गया। और वे सब डाकू वहॉ से चले गये।

जब वे डाकू चले गये तो किसान ने खुद उस दरवाजे के अन्दर जाने का फैसला किया। वह पेड़ तक गया और बोला "खुल जा ओक" तो उस पेड़ ने पहले की तरह से जॅभाई ली और फिर वहॉ एक दरवाजा खुल गया और वह उसके अन्दर चला गया।

अन्दर जा कर उसको सीढ़ियॉ दिखायी दीं तो वह उन सीढ़ियों से नीचे चला गया। नीचे उतरने पर वह एक गुफा में पहुॅच गया। वहॉ जा कर तो उसने जो कुछ देखा उससे तो उसका मुॅह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

वहॉ खजाने के तेरह ढेर लगे पड़े थे और वे सभी नीचे फर्श से ले कर ऊपर छत तक जा रहे थे। वहॉ कई ढेर सोने के थे, कई ढेर हीरों के थे और कई ढेर नैपोलियन्स[17] के भी थे।

[17] A former gold coin of France equal to 20 Francs and bearing a portrait of Napoleon I or Napoleon III.

किसान तो बहुत देर तक उनको घूरता ही रह गया। उसने तो इतना खजाना पहले कभी देखा ही नहीं था सो उसको तो वह सब देखने में ही बहुत अच्छा लग रहा था।

जब वह उनको अच्छी तरह देख चुका तो सबसे पहले उसने उनसे अपनी पोशाक की जेबें भरनी शुरू कीं। फिर उसने अपनी पैन्ट की जेबें भरीं। उसके बाद उसने अपनी पैन्ट ऊपर तक खींच ली और उससे बनी खाली जगह में सोने के टुकड़े भर लिये और फिर उनको ले कर नाचता हुआ घर चला गया।

वह जब इस हालत में घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा — "अरे यह क्या हुआ है तुमको?"

यह सुन कर उसने अपनी सारी जेबें खाली कर दीं और उसने उसको डाकू और उनकी गुफा के बारे में सब कुछ बता दिया।

उसने सोचा था कि वहाँ से लाया पैसा वह उस बोतल से गिन लेगा जिससे शराब नापी जाती है। पर उस समय उसके पास ऐसी कोई चीज़ ही नहीं थी जिससे वह उस पैसे को नाप सकता सो उसने अपनी पत्नी को अपने भाई के घर भेजा कि वह वहाँ से उस पैसे को नापने के लिये कोई चीज़ ले आये।

चमार के भाई को मालूम था कि उसका भाई तो बहुत ही गरीब था तो यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे भाई के पास ऐसा क्या आ गया जिसको वह नापना चाहता है।

और उसने नापने वाला मॅगवाया है तो क्यों मॅगवाया है क्योंकि उसके घर में तो कुछ ऐसा तो था ही नहीं जिसको उसे नापने की जरूरत पड़े। मैं देखता हूँ।

सो उसने क्या किया कि एक बोतल की तली में एक मछली की एक हड्डी चिपका दी ताकि वह जो चीज़ भी उससे नापे उसमें से उसका कुछ हिस्सा उससे चिपक जाये और वह यह जान जाये कि उसने उससे क्या नापा था और वह बोतल उसको दे दी।

किसान भाई ने अपना पैसा नापा और वह बोतल अपने चमार भाई को वापस भिजवा दी। किसान भाई ने देखा ही नहीं कि बोतल की तली में उसके भाई ने कुछ चिपकने वाला लगा दिया था जिसमें उसका एक नैपोलियन का सिक्का चिपक गया था। उसने सीधे स्वभाव अपना सामान तौल कर बोतल अपने चमार भाई को वापस करवा दी थी।

जैसे ही किसान भाई ने अपने चमार भाई को उसकी बोतल वापस की तो उसके चमार भाई ने तुरन्त ही यह देखने के लिये उस बोतल की तली को देखा कि उसके गरीब किसान भाई ने उसकी बोतल से क्या नापा था और उसकी बोतल की तली की मछली की हड्डी में कुछ चिपका था या नहीं।

उसने देखा कि वहॉ तो एक नैपोलियन सिक्का चिपका हुआ था। यह देख कर तो उसका चेहरा चमक उठा।

अच्छा तो यह बात है। वह उसी समय अपने भाई के पास भागा गया और उससे कहा — "मुझे बताओ यह पैसा तुम्हें किसने दिया?"

किसान भाई सीधा था उसने उसे सब कुछ बता दिया।

चमार भाई बोला — "भाई तुम मुझे भी उस जगह ले चलो न। मेरे बच्चे हैं पालने पोसने के लिये इसलिये मुझे पैसे की तुमसे कहीं ज़्यादा जरूरत है।"

किसान भाई राजी हो गया और अपने चमार भाई को दो गधे और चार थैलों के साथ ले कर उसी ओक के पेड़ के पास ले चला। वहॉ जा कर वह बोला "खुल जा ओक" और ओक के पेड़ में पहले की तरह एक दरवाजा खुल गया।

दोनों भाई नीचे उतरे दोनों ने अपने अपने थैले भरे और घर वापस आ गये। घर आ कर उन दोनों ने वह सामान बॉट लिया – सोना, हीरे, नैपोलियन्स, सभी कुछ। अब उनके पास बहुत पैसा था सो वे दोनों आराम से रहने लगे।

एक दिन उन्होंने आपस में बात की तो किसान भाई बोला — "अब तो हम लोग आराम से रह रहे हैं और अगर हमें मरना नहीं है तो हमको अब वहॉ जाने की कोई जरूरत भी नहीं है। हमारे पास काफी पैसा है।"

हालॉकि उस समय तो चमार भाई इस बात पर राजी हो गया कि वह पैसा उनके लिये काफी था फिर भी वह अपने आपको

दोबारा वहॉ जाने से रोक नहीं सका सो एक दिन वह अपने भाई को बिना बताये अकेला ही वहॉ चला गया।

असल में वह था ही इस किस्म का आदमी कि उसके लिये कभी कोई चीज़ काफी नहीं थी।

इत्तफाक से जब वह वहॉ पहुँचा तो वे डाकू उस पेड़ के अन्दर ही थे। वह उनके वहॉ से निकलने का इन्तजार करता रहा। आखिर वे बाहर निकले। उसने उनको गिना तो सही मगर वह उनको गिनते गिनते उनकी गिनती भूल गया।

जब वे सब वहॉ से बाहर निकल गये तो वह उस ओक के पेड़ के अन्दर गया। अब उसको अपनी गिनती भूलने की गलती का नतीजा भुगतना पड़ा। उस पेड़ में से **13** की बजाय केवल **12** डाकू ही बाहर निकले थे। इसका मतलब था कि एक डाकू अभी भी उस गुफा के अन्दर ही था।

असल में हुआ क्या था कि उस दिन जब वे डाकू वहॉ आये तो उन्होंने देखा कि उनका कुछ सामान वहॉ से गायब है।

उनको कुछ शक हुआ कि लगता है कि किसी को उनके खजाने का पता मालूम हो गया है सो वे रोज एक डाकू को वहॉ छोड़ दिया करते थे ताकि वह उस गुफा की रखवाली करता रहे और अगर कोई वहॉ आये तो उसको पकड़ भी ले।

उस दिन भी उन्होंने ऐसा ही किया था सो जैसे ही यह चमार भाई गुफा में घुसा वह एक डाकू उसके ऊपर कूद पड़ा और उसने

उसको काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। फिर उसने उनको बाहर ले जा कर पेड़ की दो शाखाओं पर टॉग दिया।

जब वह चमार भाई बहुत देर तक घर नहीं लौटा तो उसकी पत्नी किसान भाई के पास गयी और बोली — "भैया, मुझे ऐसा लगता है कि उनके साथ कुछ बुरा हो गया है। आपके भाई उस ओक के पेड़ पर गये थे और अभी तक वापस नहीं लौटे हैं।"

किसान भाई बोला — "भाभी, आप चिन्ता न करें मैं अभी जा कर देखता हूँ।" उसने रात होने का इन्तजार किया और रात होते ही ओक के पेड़ की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि ओक के पेड़ की शाखाओं से उसके भाई के शरीर के चार टुकड़े लटक रहे हैं। वह समझ गया कि उसके भाई के साथ क्या हुआ होगा।

उसने उन चारों टुकड़ों को खोला, अपने गधे पर लादा और उनको घर ले आया। चमार की पत्नी और बच्चे तो उसको इस हालत में देख कर रोने चीखने लगे।

किसान भाई अपने चमार भाई की लाश को चार हिस्सों में दफ़नाना नहीं चाहता था सो उसने अपने जानने वाले एक और चमार को बुलवाया और उसकी लाश को उससे सिलवा कर दफ़ना दिया।

अब उस चमार भाई की पत्नी के पास जो कुछ भी बचा था उस पैसे से उसने एक सराय खरीद ली और उसको चलाने लगी।

उधर डाकुओं ने देखा कि वह लाश जो उन्होंने ओक के पेड़ की शाखाओं से टॉगी थी वह गायब हो गयी है तो उन्हें कुछ शक हुआ।

उनको लगा कि अभी कोई और भी था जो उनकी गुफा का पता जानता था। सो अबकी बार वे उस दूसरे आदमी को ढूँढने निकले। उन तेरह डाकुओं में से एक डाकू शहर में गया और पता किया कि उस शहर में कहीं चार हिस्से की हुई कोई लाश तो नहीं दफ़नायी गयी।

सबके मना करने पर कि वहॉ ऐसी कोई लाश नहीं दफ़नायी गयी उन्होंने सोचा कि फिर जरूर ही किसी ने उसको सिल कर दफ़नाया होगा।

सो वह आदमी फिर सारे चमारों के पास गया और उनको एक फटा जूता दिखा कर उनसे पूछा — "क्या तुम यह जूता सिल दोगे?"

उनमें से एक चमार बोला — "क्या तुम मजाक कर रहे हो? मैंने तो एक चमार के पूरे शरीर को सिला है तो यह जूता मेरे लिये क्या चीज़ है।"

डाकू ने पूछा — "वह चमार कौन था?"

वह चमार बोला — "वह हमारा एक साथी चमार था। उसके शरीर के किसी ने चार हिस्से कर दिये थे मैंने उसी को सिला था। उसकी पत्नी अब एक सराय चलाती है।"

इस तरह से डाकुओं को पता चल गया कि वह सराय चलाने वाली ही उनके खजाने की मालकिन थी।

डाकुओं ने एक बहुत बड़ा बर्तन लिया और 11 डाकू उस बर्तन के अन्दर छिप गये। वह बर्तन उन्होंने एक गाड़ी पर लादा और बाकी दो डाकू उस गाड़ी को खींच कर ले गये। वे उसी सराय में पहुँचे जिसकी मालकिन उस चमार भाई की पत्नी थी।

वहाँ जा कर उन्होंने उस सराय की मालकिन से पूछा — "क्या तुम हमारा यह बर्तन कुछ देर के लिये रख लोगी और हमको खाना भी खिला दोगी?"

सराय की मालकिन बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप आराम से बैठें।"

कह कर उसने दोनों गाड़ी खींचने वालों के सामने मैकेरोनी[18] की दो प्लेटें रख दीं।

उस चमार की बेटी वहीं पास में खेल रही थी। उसने खेलते खेलते उस बर्तन में से कुछ आवाज सुनी तो वह उसके और पास पहुँच गयी और ध्यान दे कर सुनने लगी। उसने सुना एक आदमी कह रहा था "अब हम इस स्त्री को देख लेंगे।"

[18] Macaroni is very popular and main Italian food. It comes in several shapes. Here it is in elbow shape. See its picture above.

वह लड़की भाग कर अपनी मॉ के पास गयी और उसको जा कर बताया कि उस बक्से में कुछ आदमी हैं जो इस तरह की बात कर रहे हैं।

उस स्त्री ने तुरन्त ही चूल्हे पर से उबलते पानी की केटली उतारी और उसके पानी को उस बर्तन में पलट दिया। इतने गर्म पानी के पड़ने से वे सब डाकू जल कर मर गये।

फिर वह बाहर गयी और उन दोनों को और मैकेरोनी दी। फिर उसने शराब में दवा मिलायी जिसको पी कर वे दोनों सो गये। जब वे सो गये तो उसने उन दोनों के सिर काट लिये।

फिर वह अपनी बेटी से बोली — "जाओ, अब तुम जज के पास जाओ और उसको यहॉ ले आओ।" यह सुन कर वह लड़की जज के पास गयी और जज को बुला लायी।

जज वहॉ आया तो उसने उन डाकुओं को पहचान लिया और उस स्त्री को उन डाकुओं को मारने के लिये बहुत बड़ा इनाम दिया।

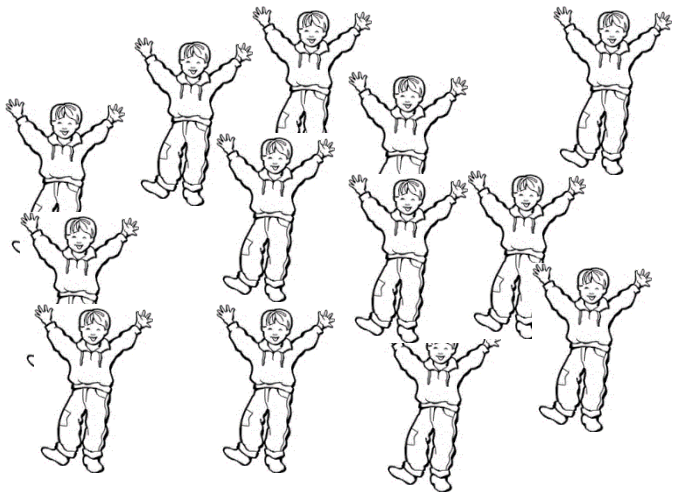

4 एक आदमी जिसने डाकुओं को लूटा[19]

अली बाबा और चालीस चोर जैसी यह कहानी भी यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह छह बहुत ही भयानक डाकू रहते थे जो हमेशा खून और डकैती में लगे रहते थे। उनका घर एक पहाड़ी के ऊपर था।

उनके घर के एक कमरे में तो केवल पैसा ही पैसा भरा हुआ था। जब भी वे अपना घर छोड़ कर जाते थे तो अपने घर के दरवाजे की चाभी एक पत्थर के नीचे छिपा जाते थे।

एक दिन एक किसान और उसका बेटा लकड़ी काटने के लिये उस पहाड़ी पर जा रहे थे कि उन्होंने डाकुओं को उनके घर में से निकलते देखा तो वे दोनों एक पेड़ के पीछे छिप गये। उन्होंने देखा कि उन लोगों ने अपने घर का दरवाजा बन्द कर के उसकी चाभी एक पत्थर के नीचे रख दी और वहॉ से चले गये।

जब वे डाकू वहॉ से चले गये तो उस किसान और उसके बेटे ने उस पत्थर के नीचे से उन डाकुओं के घर की चाभी निकाली और उनका घर खोल कर उनके घर में घुस गये। वहॉ उनको एक कमरा

[19] The Man Who Robbed the Robbers (Story No 193) – a folktale from Italy from its Campidano area. Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

केवल पैसों से भरा मिल गया तो उन्होंने अपनी जेबें पैसों से भर लीं।

पैसे निकाल कर उन्होंने घर बन्द किया, चाभी वहीं पत्थर के नीचे रख दी जहॉ वे डाकू उसे रख कर गये थे और फिर वे अपने घर वापस लौट आये।

वे अपनी आज की आमदनी से बहुत खुश और सन्तुष्ट थे। अगले दिन वे पिता और बेटा दोनों फिर वहीं गये और फिर उसी पत्थर के नीचे से चाभी निकाली और फिर पैसे भर कर ले आये।

तीसरे दिन जब बेटे ने दरवाजा खोला तो वह एक चिपकने वाली चीज़ के गड्ढे में गिर पड़ा।

असल में दो दिन से वे डाकू यह देख रहे थे कि उनका पैसा कोई ले जा रहा था सो वे यह गड्ढा अपने घर के दरवाजे के बिल्कुल बराबर में खोद गये थे ताकि अगली बार जब कोई आये तो वह उसमें गिर जाये और वे उसको पकड़ लें।

पिता ने अपने बेटे को खींच कर उस गड्ढे में से निकालने की बहुत कोशिश की पर वह उसको खींच नहीं सका। डर के मारे कि डाकू वापस आ जायेंगे और उसके बेटे को वहॉ देख लेंगे और साथ में पिता को भी पहचान लेंगे इसलिये पिता ने अपने बेटे का सिर काट लिया और उस सिर को वह घर ले गया।

डाकू जब घर लौट कर आये तो उन्होंने किसी को उस गड्ढे में पड़ा देखा। तो वे बहुत खुश हुए कि उन्होंने चोर को पकड़ लिया

पर जब पास आ कर देखा तो उस चोर का तो सिर ही नहीं था। यह देख कर वे बड़े दुखी हुए क्योंकि इस हालत में वे चोर को पहचान ही नहीं सके।

उन्होंने सोचा कि वे पहाड़ी की चोटी पर उस शरीर को टॉग देंगे और जब उसके शरीर को कोई लेने आयेगा तब वह उसको पकड़ लेंगे।

सो उन्होंने किसान के बेटे का शरीर एक पेड़ से लटका दिया और एक डाकू को वहॉ यह देखने के लिये पहरे पर लगा दिया कि वह यह देखे कि उस शरीर को लेने के लिये कौन आता है।

इधर पिता ने अपने बेटे का शरीर वापस लेना चाहा तो उसने देखा कि उस शरीर के पहरे पर तो एक डाकू बैठा है। इस हालत में तो वह उसका शरीर चुरा नहीं सकता था सो वह एक जादूगर से सलाह लेने गया कि वह उस शरीर को डाकू के पहरे से कैसे निकाले। जादूगर ने उसको बता दिया कि उसे क्या करना चाहिये।

पिता उसकी बात मान कर उस पहाड़ी की चोटी पर रात को गया और उस पेड़ के पास जा कर छिप गया जिस पर उसके बेटे का शरीर लटका था।

उसका दूसरा बेटा पहाड़ी के दूसरी तरफ जा कर छिप गया। वहॉ वह लकड़ी के दो टुकड़ों को आपस में टकरा कर ऐसी आवाज निकालने लगा जैसे दो भेड़ें आपस में सींग टकरा कर लड़ रहे हों।

जो डाकू उस लड़के के शरीर पर पहरे पर खड़ा था उसने सारा दिन से कुछ नहीं खाया था सो वह उस टकराहट की आवाज पर उन भेड़ों को पकड़ने चला गया ताकि वह उनको भून कर खा सके।

जैसे ही वह अपनी जगह से खिसका पिता ने अपने बेटे के शरीर को पेड़ पर से नीचे उतारा और उसको ले कर वहॉ से भाग लिया।

जब डाकुओं को यह पता चला कि उनका पहरे में रखा शरीर गायब हो गया तो उन्होंने मरे हुए आदमी के साथियों से बदला लेने का निश्चय किया पर वे उनको कहीं मिले ही नहीं।

काफी दिनों के बाद एक दिन वे डाकू किसी काम से गॉव गये जहॉ उन्होंने सुना कि वहॉ का एक आदमी बहुत ही जल्दी अमीर हो गया था।

वह और कोई नहीं बल्कि इस मरे हुए बेटे का पिता था जो इन डाकुओं का पैसा निकाल कर अमीर हो गया था। उनकी यह भी समझ में आ गया कि यह वही आदमी है जिसने उनके घर में चोरी की है।

उन्होंने उस आदमी को मारने का एक प्लान बनाया। उन डाकुओं ने एक आदमी को छह ऐसी बोतलें बनाने का हुक्म दिया जो इतनी बड़ी हों जिनमें एक आदमी आ जाये और जिनके ऊपर

ढक्कन भी हों। फिर हर डाकू ने अपने अपने हथियार लिये और उन बोतलों में जा कर बैठ गये।

उसके बाद उन्होंने उस बोतलें बनाने वाले को उसी अमीर आदमी के पास भेजा जो बहुत ही जल्दी अमीर बन गया था।

उन्होंने उस बोतलें बनाने वाले आदमी से कहा कि वह जा कर उस अमीर आदमी से यह कहे कि वह उसके घर में तब तक के लिये अपनी छह बोतलें रखना चाहता था जब तक कि उन बोतलों का मालिक उन बोतलों को लेने आता है क्योंकि उसके अपने घर में इतनी जगह नहीं थी कि वह उन बोतलों को अपने घर में रख सके।

उस अमीर आदमी ने मान लिया और वह बोतलें बनाने वाला उन छहों बोतलों को जिनमें डाकू बन्द थे उसके घर में रख गया। उसने वे बोतलें अपने शराब रखने वाले कमरे[20] में रखवा दीं।

उसी रात उस आदमी का एक नौकर शराब निकालने के लिये शराब रखने वाले कमरे में गया तो उसने उन नयी रखी बोतलों में से कुछ आवाजें आती सुनी। एक पूछ रहा था — "बाहर निकल कर घर के मालिक को मारने का समय हो गया क्या?"

यह सुन कर वह नौकर तो वहॉ से भाग लिया और जा कर मालिक को सब बताया। मालिक ने देखा कि वह तो पत्ते की तरह कॉप रहा था। मालिक ने तुरन्त ही सिपाहियों को बुलवाया और

[20] Translated for the word "Cellar".

उनको शराब वाले कमरे में ले जा कर उन छहों डाकुओं को पकड़वा दिया।

अब वह अमीर आदमी शान्ति से सारी ज़िन्दगी अमीर रहा। क्योंकि उन डाकुओं के बचे हुए सारे पैसे भी अब उसी के थे।

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (17 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (12 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderrella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022